

भारत - बेलारूस संबंध

राजनीतिक

बेलारूस के साथ भारत के संबंध परंपरागत रूप से गर्मजोशीपूर्ण एवं मधुर हैं। भारत उन पहले देशों में से एक था जिन्होंने 1991 में स्वतंत्र देश के रूप में बेलारूस को मान्यता प्रदान की। 1992 में राजनयिक संबंध स्थापित किए गए तथा मिंस्क में भारतीय राजनयिक मिशन खोला गया और इसके बाद 1998 में बेलारूस द्वारा नई दिल्ली में अपना राजनयिक मिशन स्थापित किया गया।

लगभग सभी अंतर्राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय मुद्दों पर विचारों में उल्लेखनीय समानता के साथ अंतर्राष्ट्रीय, बहुपक्षीय एवं क्षेत्रीय मामलों में अच्छी सूझबूझ एवं सहयोग है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सीट के लिए बेलारूस भारत की उम्मीदवारी का समर्थन करता है। बेलारूस ने वर्ष 2011-12 के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की अस्थायी सीट के लिए भारत की उम्मीदवारी का समर्थन किया था। बेलारूस ने एन एस जी में भी भारत का समर्थन किया। बेलारूस ने 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में घोषित करने के लिए भारत द्वारा लाए गए प्रस्ताव को भी सह प्रायोजित किया। भारत ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन तथा अन्य अंतर्राष्ट्रीय एवं बहुराष्ट्रीय मंचों जैसे कि आई पी यू में बेलारूस की सदस्यता के लिए बेलारूस का समर्थन किया जिसकी प्रशंसा की गई। मानवाधिकारों के उल्लंघन तथा अभिव्यक्ति की आजादी पर प्रतिबंध के लिए बेलारूस पर जेनेवा एवं न्यूयार्क में प्रतिबंध लगाए जाने वाले विभिन्न संकल्पों पर भारत के अनुकूल दृष्टिकोण की भी बेलारूस द्वारा प्रशंसा की गई है। बेलारूस भारत को एक उभरती वैश्विक महाशक्ति के रूप में मानता है तथा भारत के साथ "सामरिक साझेदारी" विकसित करना चाहता है।

स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी ने 1985 में उस समय मिंस्क का दौरा किया था जब बेलारूस सोवियत संघ का ही हिस्सा था। बेलारूस के साथ उच्च स्तरीय संपर्क बरकरार हैं। दोनों पक्षों की ओर से अनेक उच्च स्तरीय यात्राएं हुई हैं जिसमें 1997 में और फिर 2007 में राष्ट्रपति अलेक्जेंडर लुकाशेंको की यात्राएं शामिल हैं। भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी ने 2 से 4 जून 2015 तक बेलारूस का राजकीय दौरा किया तथा भारत के उप राष्ट्रपति ने 2005 में बेलारूस का दौरा किया था। इसके अलावा मंत्री स्तर पर अनेक यात्राएं हुई हैं तथा संसदीय आदान - प्रदान भी हुए हैं। लोक सभा अध्यक्ष श्रीमती मीरा कुमार ने मई 2013 में बेलारूस का दौरा किया।

रुचि एवं आवश्यकता के विभिन्न विषयों पर करार एवं एम ओ यू के रूप में अपेक्षित कानूनी रूपरेखा मौजूद हैं, जैसे कि व्यापार एवं आर्थिक सहयोग, सांस्कृतिक, शैक्षिक, मीडिया एवं खेल सहयोग के लिए करार, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी सहयोग, विदेश कार्यालय परामर्श, दोहरा कराधान परिहार करार, निवेश संवर्धन एवं संरक्षण करार, आर्थिक एवं वाणिज्यिक बातचीत को बढ़ावा देने के लिए अंतर सरकारी आयोग तथा रक्षा एवं तकनीकी सहयोग करार।

जून 2015 में बेलारूस के माननीय राष्ट्रपति की भारत यात्रा के दौरान राष्ट्रपति ने संयुक्त रूप से सहमत परियोजनाओं के लिए 100 मिलियन अमरीकी डॉलर की ऋण सहायता प्रदान करने के

लिए भारत सरकार के निर्णय की घोषणा की है। उन्होंने बेलारूस को बाजार आर्थिक स्तर प्रदान करने के लिए भारत सरकार के निर्णय की भी घोषणा की।

आर्थिक एवं वाणिज्यिक

भेषज पदार्थ, तेल एवं गैस, कृषि, उर्वरक एवं खाद्य प्रसंस्करण की पहचान अधिक क्षमता वाले क्षेत्रों के रूप में की गई है। दोनों देश अनेक तरह की सेवाओं जैसे कि सूचना प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य देखरेख, वित्तीय सेवा, परिवहन और संभार तंत्र में भी अपने संपर्कों का विस्तार कर सकते हैं। जहां तक ऊर्जा क्षेत्र का संबंध है, भारत में बेलारूस में ग्रीडनो विद्युत संयंत्र के पुनः निर्माण में भाग लिया है।

बेलारूस के 1991 में आजाद होने के बाद से बेलारूस के साथ आर्थिक एवं वाणिज्यिक सहयोग तेजी से बढ़ रहा है। दोतरफा व्यापार वर्ष 2002 में 71.97 मिलियन अमरीकी डालर से बढ़कर वर्ष 2009 में 603.72 मिलियन अमरीकी डालर पर पहुंच गया। तथापि वर्ष 2012 तक 500 मिलियन अमरीकी डालर के आसपास मंडराने के बाद द्विपक्षीय व्यापार 2014 में 431 मिलियन अमरीकी डालर रह गया, जिसका मुख्य कारण भारत द्वारा पोटैश का कम आयात तथा बेलारूस में कठिन आर्थिक स्थिति थी। व्यापार संतुलन बेलारूस के पक्ष में बना हुआ है। बेलारूस से भारी मात्रा में पोटैश का आयात है जो भारत की पोटैश की आवश्यकता को पूरा करने के लिए दूसरा सबसे महत्वपूर्ण स्रोत है।

सहयोग में वृद्धि की प्रचुर संभावना है जिसका पता लगाए जाने, उपयोग करने एवं पहचान करने की जरूरत है। यह भारत के भेषज पदार्थों एवं रासायनिक उत्पादों, आटोमोबाइल तथा ज्ञान आधारित उद्योगों के लिए एक होनहार बाजार प्रस्तुत करता है। विशेष रूप से टायर, कृषि - औद्योगिक मशीनरी, खनन उपकरण, तथा हैवी इयूटी सड़क निर्माण उपकरण में बेलारूस की औद्योगिक एवं प्रौद्योगिकीय शक्ति और बेलारूस में विनिवेश की प्रक्रिया को भी देखते हुए निवेश एवं संयुक्त उद्यम की अच्छी संभावनाएं हैं। बेलारूस अपनी स्वयं की भेषज पदार्थ उत्पादन यूनिट का विकास करना चाहता है जिसका उद्देश्य सबस्टीट्यूशन का आयात करना है। डेरी एवं कृषि आधारित उद्योग की मशीनरी एवं प्रौद्योगिकी पुरानी पड़ चुकी है तथा अपग्रेडेशन के लिए निवेश की जरूरत है। विद्युत उत्पादन एवं विद्युत पारेषण के क्षेत्र में असंख्य परियोजनाएं हैं जिसमें भारतीय कंपनियां भाग ले सकती हैं।

आवश्यक तंत्र स्थापित किए गए हैं जिसमें भारत - बेलारूस आर्थिक, व्यापार, औद्योगिक, वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकीय एवं सांस्कृतिक सहयोग के लिए अंतर सरकारी आयोग शामिल है। अंतर सरकारी आयोग की 6वीं बैठक 24 जुलाई 2013 को दिल्ली में हुई है। बेलारूस के उद्योग मंत्री के नेतृत्व में कारोबारियों का एक शिष्टमंडल मई 2015 में भारत आया था। उन्होंने फिक्की के साथ एक सहयोग करार पर भी हस्ताक्षर किया। भारतीय कारोबारियों के शिष्टमंडल ने भी 2 से 4 जून 2015 तक बेलारूस का दौरा किया तथा बेलारूस की कंपनियों के साथ कई करारों पर हस्ताक्षर किए गए। भारत और बेलारूस ने जुलाई 1998 के दोहरे कराधान परिहार करार के प्रोटोकाल (संशोधन) की पुष्टि प्रक्रिया पूरी की।

माननीय वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमन ने व्यापार, आर्थिक, वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकी एवं सांस्कृतिक सहयोग पर भारत - बेलारूस अंतर सरकारी आयोग (आई जी सी) की 7वीं बैठक की सह अध्यक्षता करने के लिए 6 और 7 सितंबर 2015 को मिंस्क, बेलारूस का दौरा किया। व्यापार, आर्थिक, वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकी एवं सांस्कृतिक सहयोग के लिए प्रोटोकाल पर हस्ताक्षर किए गए। प्रोटोकाल में अनेक अन्य मुद्दों को उजागर किया गया जैसे कि कारोबार के लिए यात्रा करने वालों के लिए वीजा प्रक्रिया को सरल बनाना, फार्मास्युटिकल सेक्टर से संबंधित मुद्दों पर चर्चा करने के लिए संयुक्त कार्य समूह स्थापित करना, नए क्षेत्रों जैसे कि तंबाकू, तेल एवं गैस अन्वेषण, कृषि एवं हल्के औद्योगिक उत्पादों के क्षेत्रों में सहयोग। 2018 तक 1 बिलियन अमरीकी डालर के द्विपक्षीय व्यापार का एक नया लक्ष्य निर्धारित किया गया।

बेलारूस के साथ पोटेश क्षेत्र में सहयोग का विस्तार करने के लिए चर्चा करने हेतु सचिव, उर्वरक विभाग के नेतृत्व में भारतीय उर्वरक क्षेत्र के एक प्रतिनिधिमंडल ने 29 अक्टूबर से 2 नवंबर 2015 के दौरान मिंस्क का दौरा किया। शिष्टमंडल ने बेलारूस पोटेश कंपनी (बी पी सी), बेलनेफटेकहिम, राज्य संपदा समिति तथा बेलारूस के उप प्रधानमंत्री श्री सेमाशको व्लादिमीर के साथ बैठकें की। शिष्टमंडल ने सोलीगोर्स्क में बेलारूसकली की पोटेश खान तथा गोमेल ओबलास्ट में बेलनेफटेकहिम के गोमेल केमिकल प्लांट का भी दौरा किया।

मिलियन अमरीकी डालर में द्विपक्षीय व्यापार के आंकड़े इस प्रकार हैं :

वर्ष	बेलारूस का निर्यात	बेलारूस का आयात	कुल
2011	374.712	173.094	547.806
2012	262.217	232.214	494.431
2013	169.871	181.441	351.312
2014	243.175	188.523	431.698
2015 (जनवरी - अक्टूबर)	282.029	110.880	392.909

भारत एवं बेलारूस के बीच आर्थिक एवं वाणिज्यिक संबंध को और सुदृढ़ करने एवं विविधता लाने के लिए दोनों पक्षों में गहरी रुचि है। भेल ने जून 2013 में ग्रांडी विद्युत परियोजना- II के लिए उपकरण एवं मशीनरी की आपूर्ति की है एवं उनको इंस्टाल किया है। बेलारूस ने अपने खनन क्षेत्र में भारतीय कंपनियों की सेवाएं लेने की रुचि प्रदर्शित की है। बेलारूस की अमकोडोर नामक कंपनी भारतीय स्थितियों के अनुरूप उपकरण विकसित कर रही है। वर्ष 2011 में भारत में बेलारूस के डंप ट्रकों की सर्विसिंग के लिए एक संयुक्त उद्यम स्थापित करने के लिए भारतीय कंपनी एनरिका के साथ बेलज ने एक एम ओ यू पर हस्ताक्षर किया। बेलारूस ने नवंबर 2012 में 'साझेदार देश' के रूप में भारत के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला में भाग लिया। 60 कंपनियों की मौजूदगी के साथ बेलारूस सबसे बड़ा विदेशी प्रतिभागी देश था।

व्यापार बास्केट सीमित है, जिसका संक्षिप्त ब्यौरा यहां नीचे दिया गया है :

भारत का बेलारूस को निर्यात : बेलारूस को भारतीय निर्यात के तहत मुख्य रूप में दवाएं, कच्चा तंबाकू एवं तंबाकू अपशिष्ट, कॉटन यार्न, इलेक्ट्रिक ट्रांसफार्मर, एंटीबायोटिक्स, कॉफी / चाय के एक्सट्रैक्ट, चावल, कार्बोनिक एसिड के कंपाउंड, लौह धातु के सामान आदि शामिल हैं।

बेलारूस से भारतीय आयात : बेलारूस से भारत जिन सामानों का आयात करता है उनमें पोटाश उर्वरक, नाइट्रोजन उर्वरक, टायर के लिए नाइलोन कार्ड सामग्री, कृत्रिम धागे, हॉट रोल्ड राल्ड, रबर अपशिष्ट / ऑफ कट एवं स्क्रेप, कच्चा लोहा या अलाय फ्री स्टील, न्यूमेटिक रबर टायर एवं ट्यूब, प्राथमिक रूप में पोलीमाइड्स, पोलीकार्बोक्सिलिक एसिड एवं उनके एनहाइड्राइड्स आदि शामिल हैं।

रक्षा

रक्षा सहयोग बेलारूस के साथ भारत के द्विपक्षीय संबंधों का एक महत्वपूर्ण पहलू है। सैन्य तकनीकी सहयोग पर एक भारत - बेलारूस संयुक्त आयोग है जिसकी पिछली बैठक 21-22 मई 2015 को मिंस्क में हुई थी। भारत आई टी ई सी व्यवस्था के तहत विभिन्न भारतीय संस्थाओं में बेलारूस के सैन्य एवं रक्षा कर्मियों के प्रशिक्षण / अटैचमेंट के लिए बेलारूस को 10 स्लॉटों की भी पेशकश करता है। बेलारूस के साथ रक्षा सहयोग की संभावना में वृद्धि हो सकती है, विशेष रूप से इस बात को देखते हुए कि पूर्व सोवियत संघ के समय से ही बेलारूस में विनिर्माण एवं प्रौद्योगिकी बैकअप है जिसमें भारत की रुचि हो सकती है। कतिपय परंपरागत हथियारों (सी सी डब्ल्यू) पर अभिसमय के प्रोटोकॉल 5 के तहत युद्ध के विस्फोटक अवशेषों (ई आर डब्ल्यू) को समाप्त करने के लिए बेलारूस को सहायता के तहत भारत ने अप्रैल 2014 और मार्च 2015 में बेलारूस को क्रमशः 90 रेडियो सेट तथा 30 जी पी एस नेवीगेटर तथा 25 माइन डिटेक्टर की आपूर्ति की।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

बेलारूस में उत्तम कोटि का एक अच्छा मानव संसाधन तथा मजबूत वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकीय स्थापना है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी सहयोग में वृद्धि की अच्छी संभावनाएं हो सकती हैं। भारत की ओर से डी आर डी ओ एवं डी एस टी तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पर बेलारूस राज्य समिति तथा बेलारूस विज्ञान अकादमी आदि जैसी संबंधित एजेंसियां परस्पर हित के क्षेत्रों में एक दूसरे के साथ भागीदारी कर सकती हैं। बेलारूस इन संपर्कों एवं अंतःक्रियाओं में वृद्धि करने का काफी इच्छुक है। बेलारूस ने 1991 में हैदराबाद में पाउडर मेटलर्जी एवं नई सामग्री के लिए एक उन्नत अनुसंधान केन्द्र स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। मिंस्क में हाई टेक्नोलॉजी पार्क में आई सी टी में एक डिजिटल लर्निंग सेंटर वर्ष 2011 में स्थापित किया गया है, जिसके लिए भारत की ओर से डी आई टी (सीडैक) नोडल एजेंसी थी। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में सहयोग के लिए गठित भारत - बेलारूस अंतर सरकारी आयोग की 6वीं बैठक 12 दिसंबर 2014 को नई दिल्ली में हुई।

संस्कृति एवं शिक्षा

बेलारूस भारत - यू एस एस आर सांस्कृतिक संबंधों की विरासत का स्वामी है। भारतीय फिल्मों, नृत्य एवं संगीत बेलारूस में काफी लोकप्रिय हैं। बेलारूस के अनेक युवाओं की हिंदी सीखने तथा भारत के शास्त्रीय नृत्यों को भी सीखने में गहरी रुचि है। भारत के विभिन्न अभिनय कला विद्यालयों एवं संस्थानों में बेलारूस के छात्रों को प्रशिक्षण देने के लिए आई सी सी आर उनके लिए हर साल कुछ छात्रवृत्तियों की पेशकश करता है। भारत - बेलारूस मैत्री सोसाइटी से समाज के विभिन्न क्षेत्रों से बेलारूस के अनेक प्रख्यात व्यक्ति जुड़े हुए हैं। आई सी सी आर द्वारा प्रायोजित

एक हिंदी प्रोफेसर में बेलारूस के राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की रुचि है। बेलारूस खेल टीमों के आदान प्रदान की संस्थानिक व्यवस्था स्थापित करने का इच्छुक है। बेलारूस ने भारत एवं बेलारूस के कलाकारों को शामिल करते हुए फीचर फिल्मों के संयुक्त निर्माण में सहयोग स्थापित करने में भी रुचि प्रदर्शित की है। बेलारूस के संस्कृत के एक विद्वान प्रो. मिखैल मिखैलोव ने रूसी भाषा में "वेदों की कुंजी" नामक एक पुस्तक लिखी है जिसका अंग्रेजी में भी अनुवाद किया गया है। बेलारूस की एक अन्य हिंदी भाषी स्वर्गीय सुश्री ताइसा बोंडर ने रूसी भाषा में संत कबीर के दोहों का अनुवाद किया था।

सांस्कृतिक संबंधों को प्रोत्साहित करने एवं बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक स्थानीय शिक्षक चांसरी में भारतीय शास्त्रीय एवं आधुनिक नृत्यों की कक्षाएं चला रहा है। इसी तरह चांसरी में योग की कक्षाएं भी लगती हैं। आई सी सी आर छात्रवृत्ति एलुमिनी द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न स्थानीय भारतीय नृत्य / सांस्कृतिक दलों की सहायता से बेलारूस के विभिन्न शहरों में दूतावास द्वारा भारतीय सांस्कृतिक शो का आयोजन किया जाता है। A प्रसिद्ध संतूर वादक पं. भजन सोपोरी के नेतृत्व में एक सांस्कृतिक मंडली, जिसे 'नमस्ते बेलारूस' नामक कार्यक्रम के तहत आई सी सी आर द्वारा प्रायोजित किया गया, ने 9 से 12 मार्च 2015 तक बेलारूस का दौरा किया। उन्होंने बेलारूस के मिंस्क और विटेबस्क में अपनी कला का प्रदर्शन किया। A भारत के राष्ट्रपति द्वारा बेलारूस के राजकीय विश्वविद्यालय में 3 जून 2015 को महात्मा गांधी जी की एक आवक्ष प्रतिमा का अनावरण किया गया।

21 जून 2015 को मिंस्क में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। लगभग 7000 लोग पार्क में आए और योग दिवस समारोह का हिस्सा बने।

सोवियत संघ के दिनों से ही शैक्षिक संपर्क बने हुए हैं। इस समय भारत के 150 छात्र बेलारूस के विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं संस्थाओं में पढ़ाई कर रहे हैं तथा इनमें से अधिकतर चिकित्सा एवं इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहे हैं। शैक्षिक संस्थाओं के बीच संस्थानिक व्यवस्था स्थापित करके इस संबंध में सहयोग बढ़ाने की संभावनाएं हो सकती हैं। बेलारूस भारत के आई टी ई सी कार्यक्रम का लाभार्थी है तथा वर्ष 2015-16 के लिए अल्पावधिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के 40 स्लॉट आवंटित किए गए हैं। बेलारूस के लगभग 260 पेशेवर आई टी ई सी के पुराने विद्यार्थी हैं। दूतावास परिसर में 15 अक्टूबर 2015 को आई टी ई सी दिवस 2015 मनाया गया। इस कार्यक्रम में आई टी ई सी के लगभग 90 पुराने छात्रों ने भाग लिया।

बेलारूस ने दिसंबर 2002 में कोलकाता में एक मानद कोंसुलेट खोला है। इस समय श्री सीताराम शर्मा बेलारूस के मानद कोंसुल हैं।

उपयोगी संसाधन :

भारतीय दूतावास, मिंस्क की वेबसाइट :

<http://www.indembminsk.in/>

भारतीय दूतावास, मिंस्क का फेसबुक पेज :

<https://www.facebook.com/pages/Indian-EmbassyMinsk/118074464965513?ref=ts&fref=ts>

जनवरी, 2016